Jan 2020 - Mar 2020, Vol 6, No. 1, 79-83 ISSN : 2394 -9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

Research Articles

राजेश जोशी : गहरे निहितार्थी का कवि

शिप्रा द्विवेदी[1]

1. सह–प्राध्यापक, (हिन्दी), शा.ठा. रणमत सिंह महा. रीवा (म.प्र.)

Received : 18-Mar-2020	**Revised** : 24-Mar-2020	**Accepted** : 28-Mar-2020

सारांश

मेरे इस शोध पत्र का उद्देश्य राजेश जोशी की कविता में व्याप्त मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक सरोकारों का मूल्यांकन करने के साथ ही उनकी सूक्ष्य संवेदनात्मक भावभूमि की व्याख्या करना भी है।

प्रस्तावना

राजेश जोशी की कविता हमारे समय का ऐसा संघनित दस्तावेज है कि केवल उसके आधार पर हम समकालीन भारत का एक दृश्य लेख बना सकते हैं। इतने तात्कालिक ब्यौरें, इतने प्रसंग, पात्र और राजनीतिक सामाजिक उद्वेलन। एक साथ मिलते है इनके यहाँ कि कविता जीवन के उन तन्तुओं की खोज करती है जो मनुष्य को मनुष्य बनाते है। जहाँ उन उद्वेलनों का कंप सबसे तीव्र है, और उन लोंगो का यशोगान करती है जो निरंतर संघर्ष करते हुए जीवन को बदलने का ताब रखते हैं। उनकी कविता साहस के साथ सत्ता के सभी पायदानों पर वार करती है, एक विराट सत्ता जो अर्थव्यवस्था से लेकर हमारी रसोई तक व्याप्त है। नागार्जुन और धूमिल के बाद सत्ता के तिलिस्म को उघाड़ने वाले सबसे सशक्त कवि राजेश जोशी हैं। उनकी एक कविता 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' में इसी सामाजिक व्यवस्था को देखा जा सकता हैं।

'बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति हैं यह
भयानक हैं इसे विवरण की तरह लिखा जाना हैं
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह'[1]

सवाल सिर्फ यह नहीं हैं कि बच्चे काम पर जा रहे हैं। स्कूल जाते बच्चे भी किताबों के बोझ से दबे जा रहे हैं, उससे ले जाकर छोड़ देना भी भयानक हैं, बच्चों को जादुई दुनिया से खींच कर स्वप्नहीन दुनिया में लाना। कवि ऐसी व्यवस्था पर सवाल करता है जो बच्चों का बचपन छीन कर उनके हाथ में काम सौंप रहा हैं। राजेश जोशी यथार्थ की इस समझ के कवि हैं राजेश जोशी की 'समझ' से समकालीन कविता और उनकी नई पीढ़ी अभिन्न है नई पीढ़ी के जो कवि इस समझ से इत्तफ़ाक नहीं रखते, राजेश जोशी शायद उनके साथ भी खड़े मिल सकते हैं। 'चाँद की वर्तनी' कविता में कुछ ऐसे ही दिखते हैं।

'चाँद लिखने के लिए चा पर चन्द्र बिन्दु लगाता हूँ
चाँद के ऊपर चाँद धरकर इस तरह
चाँद को दो बार लिखता हूँ'[2]

यों भी कविता में राजनीति चल सकती हैं, चालाकी नहीं। हिन्दी के सातवें.आठवें दशक में ऐसी प्रतिभाएँ भी देखी गईं, जो एक ओर कविता में राजनीति का समर्थन करती थीं, और दूसरी ओर कविता से विचार के बहिष्कार के लिए दलीलें पेश करती थीं ऐसे में राजेश जोशी एक नवीन धारा से, आख्यान, कथोपकथन, लोक कथाओं के स्वप्न वृतांत, जातीय मिथक, अतियथार्थ के खेंमे, सपाटबयानी, शब्दों के खेल और कल्पना क्रीड़ा, फंतासी सब कुछ मिलकर एक ऐसा नया रसायन बनाते हैं वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। राजेश जोशी की कविता अब भाषा के नए उपकरणों एवं आयुधों का व्यवहार करती है तथा कविता को वहाँ ले जाती है जहाँ भाषा अर्थ से अधिक अभिप्रायों में निवास करती है। राजेश जोशी की कविता ठोस जगत की, ठोस जीवन की कविता है। वे सारे गुण और स्वाद जिसके लिए राजेश जोशी जाने और माने जाते है। उसके साथ अपनी रचनाओं में पूर्णता एवं सौष्ठव के साथ उपस्थित हैं, साथ ही बहुत कुछ ऐसा भी है जो नितांत अप्रत्याशित पर आह्लादकारी है और वह है जीवन को उसकी जटिलता में जाकर देखने का उपक्रम, सभी तहों पर्तों को उधेड़कर अनुभव की एक नई दुनिया रचते है एवं उत्खनन का धैर्य दिखने में जो अक्सर आसान से दिखते हैं, एक कवि को करने होते है ऐसे कई पेचीदा काम और इसके लिए राजेश जोशी तद्नुरूप भाषा की खोज भी करते हैं, बनी बनाई भाषिक आदतों को छोड़ते हुए व अभिव्यक्ति के खतरे उठाते हैं। 'मारे जाएँगे' कविता में इसे साफ तौर से देखा जा सकता हैं

'धकेल दिए जाएँगे कला की दुनिया से बाहर,
जो चारण नहीं होगें
जो गुन नहीं गाएँगे, मारे जाएँगे'[3]

राजेश जोशी की कविताओं को पढ़ना और उसके समय से दस–पद्रंह साल पीछे की कविता और उससे जुड़ी बहसों के बारे में सोचना, और इतने ही साल आगे की कविता और मुश्किलों की ओर ताकना है। शायद इतना पर भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि राजेश जोशी ने जब कवि कर्म आरंभ किया और उसके तीन साल अनन्तर उनकी कविता को अलग पहचान मिली, उस समय तीन चार पीढ़ियाँ और उससे कई गुना अधिक साहित्यिक वैचारिक छवियाँ कि काव्य परिदृश्य में विद्यमान थीं। कुछ थोड़े पुराने और कुछ नए कवियों के बीच, उनके थोड़ा साथ होकर और थोड़ा उनसे अलग हटकर, राजेश जोशी खड़े देखे गए। कुछ नये कवि पिछले दशक की चेतना से ही आविष्ट थे, तो कुछ राजेश जोशी की पहचान के इर्द–गिर्द थे। इनसे अलग अधिकांश नए बिंदु और संवेदना आदि की दुनिया में अंधी दौड़ के लिए मजबूर थे। उनमें से शायद ही कोई हिंदी कविता में बने रहने की ताकत दिखा सका हो। लेकिन कविता के नवआगमन में उनकी भी भूमिका थी, इससे आज इनकार नहीं किया जाना चाहिए। राजेश जोशी की कविता में अपने समय की समझ है। अपने शहर की गलियों से अर्जित संवेदनाओं और मूल्यों को बचाने की कोशिश इनकी कविता में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

स्वप्न का आकाश रचने की कला राजेश जोशी को लोककथाओं स्मृतियों, और शैशव बिम्बों से मिली है। यह चेतना का स्वभाव है कि वह स्मृति स्थलियों से पैदा होती है और किसी अनूठे लोक की रचना में भिड जाती है। उसके इस कार्य का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है कविता। कोई घटना, कोई दृश्य, कोई विचार स्मृतियों की राह से गुजर कर कविता में घटित होता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं की स्मृतियाँ जीवन की पुनः रचना हैं। उनका स्वभाव हैं नष्ट करना, न कि बचाना। कवि का स्वभाव है स्मरण करना और भविष्य में प्रक्षेपित करना। लेकिन 'तंग वर्तमान' कुछ दुर्भाग्य पूर्ण स्वपनों की रचना के लिए भी विवश करता है। 'रैली में स्त्रियाँ' कविता में इसी दुर्भावना की अभिव्यक्ति की गई है।

'रैली में चलती स्त्री
जैसे ब्रहाण्ड में अनथक चलती पृथ्वी को देखना है,
बाहर वह जितनी दिख रही है,
उससे उसके सपनों और उसके भीतर मची उथल–पुथल का
अनुमान लगाना नामुमकिन है'[4]

राजेश जोशी ने अपने समय और समाज से टकराते हुए हर संवेदनशील मुद्दे को बेहद मजबूती के साथ अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनात्मकता के केन्द्र मे साम्प्रादायिक विद्वेष के भीतर परास्त हो रही मानवता का चेहरा सामने आता दिखेगा। आधुनिकता के अर्थ केन्द्रित विकास ने पूरे वैश्विक संरचना को इस कदर असंतुलित किया है कि हर तरफ मार–काट और

त्राहि–त्राहि मची हुई दिखती है। सामप्रादयिक शक्तिाओं का उन्माद अपने चरम पर है। ऐसे में कुछ भले मानस लोग विवश नजर आते हैं। सामप्रादयिक दंगे आदमी को किस तरह बैखलाहट में डाल देते हैं, सामप्रादयिकता के नाम पर दर्ज एक छोटी सी घटना किस कदर अखिल भारतीय रूप ले लेती हैं, वह कितना जल्दी फैल कर इंसान के बीच कौमी दीवार खड़ी कर देती है। इन सारी स्थितियों से कवि स्वयं को रूबरू है ही एवं अपने पाठक का भी रूबरू कराता है। और इसे इन कविताओं 'मैं और सलीम उनसठ साल', 'मेरठ 87', 'जब तक मैं एक अपील लिखता हूँ', और 'बर्बर सिर्फ बर्बर थे' में साफ तौर पर देखा जा सकता हैं।

'हर स्टेशन पर पूँछता हैं बूढ़ा
"कौन सा टेशन है भैया?"
हर स्टेशन पर बाहर झाँकता हैं लड़का
पढ़ता है बोर्ड और कहता है मेरठ।'[5]

निष्कर्ष

राजेश जोशी की कविताओं में व्यवस्था के विरोध के साथ–साथ बेहतर सामाजिक संरचना का स्वप्न भी मौजूद है। राजेश जोशी कई सारें बिन्दुओं पर अपने समकालीनों में विशिष्ट इस अर्थ में भी है कि उनके यहाँ संग्रह तथा त्याग का विवेक अन्य की अपेक्षा ज्यादा स्पष्टता के साथ रेखांकित किया गया है। सबकुछ सत्ता की जकड़ में कैद हो तो क्रांति की बात थोड़ी बेमानी लगती है। ऐसे में राजेश जोशी जैसे दृष्टि सम्पन्न कवि प्रतिरोध की सबसे छोटी ईकाई से भी क्रमिक परिवर्तन की आश लगाये अपना पक्ष स्पष्ट करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रतिनिधि कविताएँ (संकलन) बच्चे काम पर जा रहे हैं, पृष्ठ 74 राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. चाँद की वर्तनी (संकलन) चाँद की वर्तनी, पृष्ठ–99 राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. प्रतिनिधि कविताएँ (संकलन) मारे जाएँगे, पृष्ठ–79 राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. चाँद की वर्तनी (संकलन) रैली में स्त्रियाँ, पृष्ठ–32 राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. प्रतिनिधि कविताएँ (संकलन) मेरठ 87, पृष्ठ–80 राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली